Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 5, April-2019, ISSN 2230-7540

गुप्तोत्तर कालीन एतिहासिक सर्वेक्षण

Dr. Manoj Kumar Deo*

Near KB Jha College, Katihar

सार – *गुप्तकाल में समाज, धर्म, कला, साहित्य व विज्ञान के विकास के साथ ही एक मजबूत आर्थिक ढाँचे का गठन हुआ। विभिन्न क्षेत्रों में गुप्तकाल की उपलब्धियों के कारण ही इसे क्लासिकल एज की संज्ञा दी गई है। गुप्तकाल के सांस्कृतिक विकास में इसकी आर्थिक समृद्धि का प्रमुख योगदान रहा है। कृषि, उद्योग और व्यापार में इस काल में काफी वृद्धि हुई। कई इतिहासकारों ने गुप्तकाल के अंतिम चरण में सामंतवाद का उदय बताया है और सामन्तीय व्यवस्था को देश की अर्थव्यवस्था के विघटन का संकेत माना जाता है। गुप्तकाल क्लासिकल युग था अथवा अर्थव्यवस्था के धीरे-धीरे ह्रास का काल, यह एक अत्यन्त विवादास्पद तथ्य है।*

----------X----------

शब्दावली-

गुप्तोत्तर- गुप्तशासन के बाद की अवधि, गौड़- शक्तिशाली जाति, थानेश्वर- उत्तरी दिल्ली, महाराधिराज - एक सम्मानजनक उपाधि,

सराय- यात्रा क्रम में विश्राम स्थल,

विभिन्न एतिहासिक स्त्रोतो से जग-जाहिर होता है कि, पांचवी शदी के आस-पास गुप्त साम्राज्य का पतन होना शुरु हो गया था तथा इस फली-फुली सभ्यता के गर्त मे मिलने के साथ ही मगध और उसकी राजधानी पाटलीपुत्र में भी अपना महत्व और अस्तित्व सदा के लिए खो दिया। फलतः गुप्तोत्तर काल पूर्ण रुप से संघर्षमय गाथा बन कर रह गया। यह बात भी किसी से छिपी नहीं है कि गुप्तों के पतन के परिणामस्वरुप खास कर उत्तरी भारत में एक दो नहीं अपितु पाँच-पाँच शक्तिशाली साम्राज्यों का उदय हुआ जिसका विष्लेषण इस प्रकार है-

1) हूण- मध्य एशिया कि हूण सामान्य जनजातियां थी जो भारत आई। कुमार गुप्त के काल में हूणों ने पहली बार भारत पर आक्रमण किया था, यद्यपि वे कुमार गुप्त और स्कंध गुप्त के काल में सफल तो नहीं हो पाए फिर भी भारत में उनका प्रवेष संभव हुआ। हूणों ने बहुत अल्प काल तक (30 वर्ष) भारत में शासन किया, फिर भी उत्तरी भारत में उन्होने अपनी शक्ति को स्थापित किया। इतिहास गवाह है कि तोड़मान उनका सबसे शक्तिषाली राजा और मिहिरकूल उनका सबसे संस्कृति सम्पन्न शासक था।

2) मौखरी- कहा जाता है कि पच्छिमी उत्तरप्रदेश में कन्नौज के आस-पास मौखरियों का शासन था। उन्होनें भी मगध के कुछ हिस्सों पर विजय हासिल किया था। क्रमश उत्तरी गुप्त शासकों के द्वारा वे पराजित हुए और मालवा कि तरफ से निसकासित किया गया।

3) मैत्रक- कुछ इतिहासकारों ने मैत्रकों के बारे में यह संभवना लगाये है कि ये सभी मैत्रक इरान के रहने वाले थे तथा गुजरात के सौराष्ट के क्षेत्र में शासन किया था। उनकी राजधानी वल्लवी थी। इनके शासन में राजधानी भी वल्लभी ही थी। मैत्रक के शासनकाल में वल्लभी ने कला, संस्कृति, व्यापार, वाणिज्य आदि के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की, जिसने अरबों के आक्रमण तक अपनी उपस्थिति बनाए रखा।

4) पुष्यभूति- पुष्यभूतियों की राजधानी थानेस्वर यानी उतरी दिल्ली थी। प्रभाकर वर्धन इस साम्राज्य का सबसे महत्वपूर्ण शासक था। उसने परमभत्तारक महाराजाधिराज नामक उपाधि धारण की थी। मौखरियों के साथ उनके वयवाहिक संबंध भी थे। व्यवहायिक संबंधों की वजह से दोनों साम्राज्यों की शक्ति में अनार वृद्धि हुई। हर्षवर्धन इसी गौत्र से संबंध रखता था।

5) गौड़ - गौड़ों ने बंगाल के ऊपर शक्तिशाली राजा शशांक था। उसने मौखरियों के ऊपर आक्रमण

www.ignited.in

करके ग्रहवर्मन को बुरी तरह से पराजित किया तथा राजश्री को बंदी बना लिया।

महत्वपूर्ण साम्रज्य और शासक -

हर्षवर्धन का साम्राज्य:- हर्षवर्धन (606-647 ई0)

हर्षवर्धन ने 1400 वर्ष पूर्व शासन किया था। बहुत सारे एतिहासिक स्त्रोत हर्षवर्धन साम्राज्य के बारे में उल्लेख करते हुए लिखें है कि चीनी यात्री ह्वेनसांग ने सी-यू-की नामक ग्रंथ की रचना की थी। तो वही वाणभट्ट ने हर्षचरित (हर्षवर्धन के उत्कर्ष और उसके साम्राज्य, शक्ति तथा उसकी आत्मकथा का उल्लेख) कादम्बरी और प्रभावती परिणय की रचना की थी। हर्ष की रचना- हर्ष ने स्वयं राजनैतिक परिस्थितियों का वर्णन करने के लिए रत्नावली, नागनंद और प्रियदर्शिका की रचना की थी। इतना ही नहीं महान हर्षवर्धन ने स्वंय हरिदत्त और जयसन को भरपूर संरक्षण दिया था।

हर्ष की शक्ति का उत्कर्ष-अपने बड़े भाई राज्यवर्धन की मृत्यू के पष्चात 606 ई0 में हर्षवर्धन राजा बन बैठा। राजा बनने के साथ ही उसने अपने भाई की मौत का बदला लेने और अपनी बहन को मुक्त कराने के लिए बंगाल के राजा शशांक के विरुद्ध एक वृहद अभियान का नेतृत्व किया। गौड़ों के खिलाफ अपने अभियान में वह बिलकूल असफल रहा, पर जल्द ही उन्होंने अपने साम्राज्य का विस्तार किया। रत्नावली, नागानन्द और प्रियदर्श की रचना में इसकी चर्चा देखने को मिलती है।

डॉ. जयसवाल कौमोदी महोत्सव नामक नाटक के आधार पर गुप्तों का स्थान कौशाम्बी का प्रदेश मानते है किन्तु अन्य विद्यानों ने इसे स्वीकार नहीं किया है। गुप्तों का मूल निवास स्थान बंगाल मानने वाले विद्यानों मे प्रमुख डॉ. गांगूली, डॉ. मजुमदार एवं समाज सुधारक चट्टोपाद्याय जी है। डॉ. गांगूली के अनुसार आदिगुप्त-नरेश पच्छिम बंगाल में आधुनिक मुर्शिदाबाद के समीप शासन करते थे। अपने मत के समर्थन में डॉ. गांगूली इत्सिंग के यात्रा वृतांत को प्रस्तुत करते है। इत्सिंग ने लिखा कि उसके भारत आगमन (671-695 ई0) से पांच सौ वर्ष पूर्व हुई-लून नामक चिनी यात्री भारत आया था। उस समय 'चि-लि-के-तो' नामक शासक राज्य कर रहा था। जिसने चीनी यात्रियों की सुविधा के लिए एक बौद्ध मंदिर का निर्माण करवाया था। यह मि-लि-किआ-सि-सिआ-को-न (मृग शिखावन) नामक बौद्ध विहार के समीप था। इसकी देरी नालंदा से पूर्व में गंगा के किनारे-किनारे 40 स्टेज (240 मील) थी। चि-लि-के-तो का गांगुली के अनुसार नालंदा से पूर्व में 240 मील पर मूर्शिदाबाद ही माना है। किन्तु सुधाकर चट्टोपाध्याय गुप्तों का मूल निवास स्थान मुर्शीदाबाद के स्थान पर पश्चिमी बंगाल मे ही आधुनिक माल्दह जिले में किसी स्थान को मानते है। किन्तु उपयुक्त मतों को स्वीकार करने में अनेक कठिनाईया है। श्री गुप्त व इत्सिंग द्वारा वर्णित चे-लि-के-तो को एक व्यक्ति स्वीकार नहीं किया जा सकता क्योंकि दोनों के कालों में एक शताब्दी का अन्तर है। इसके अतिरिक्त विभिन्न स्त्रोतों से ज्ञात है कि चन्द्रगुप्त प्रथम के समय तक बंगाल पर गुप्तों का अधिकार नहीं था। अतः इस मत को स्वीकार नहीं किया जा सकता।

प्रो0 जगन्नाथ का विचार है कि गुप्तों का आदि स्थान बनारस के समीपवर्ती क्षेत्र का, इत्सिंग के वृतांत का प्रमाणिक अनुवाद चीनी भाषा के विद्वान सैमुएल बिल ने किया है। इस अनुवाद के आधार पर प्रो0 जगन्नाथ ने यह निष्कर्ष निकाला है कि मृग षिखावन नालंदा से पूर्व में नहीं व्रण पश्चिम में 40 स्टेज की दूरी पर था। नालंदा से पश्चिम में 40 स्टेज की दूरी पर सारनाथ स्थित है जहाँ मृगदाव नामक मंदिर भी है। इसी के समीप ही मृग शिखावन नामक चीनी मंदिर रहा होगा। अतएव गुप्तों का आदि निवास स्थान सारनाथ का समीपवर्ती ही रहा होगा।

पुराणों के प्रारंभिक गुप्त शासकों का उत्तर प्रदेश तथा मगध पर अधिकार था। फलतः ऐसा प्रतित होता है कि गुप्तों का आदि निवास स्थान पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा पश्चिमी मगध का भू-भाग था।

गुप्त अभिलेखों से ज्ञात होता है कि गुप्त वंश का संस्थापक श्रीगुप्त था। किन्तु स्मिथ ऐलन एवं जायसवाल जी का विचार है कि गुप्तों का आदि पुरुष 'गुप्त' था। उसके नाम के साथ श्री शब्द सम्मानार्थ जोड़ा गया है। इन विद्यानों के अनुसार इस मत कि पुष्टि समुन्द्रगुप्त कि प्रयाग प्रषस्ति से होती है जिसमें समुन्द्रगुप्त ने स्वयं को महाराज श्रीगुप्त का प्रपौत्र बताया है। इस प्रष्सित में सभी गुप्त राजाओं के नाम के साथ श्री जोड़ा गया है तथा यदि किसी का नाम श्री से प्रारंभ हो रहा हो तो वहाँ दो बार श्री शब्द का प्रयोग किया गया है। अतः गुप्त वंश के संस्थापक का 'गुप्त' ही ज्यादा प्रमाणित प्रतीत होता है।

श्री गुप्त के लिए गुप्त अभिलेखों में 'महाराज' उपाधि का प्रयोग किया गया है जिससे प्रतीत होता है कि श्रीगुप्त स्वतंत्र नहीं था। सिलवा लेवी व सुधाकर चट्टोपाद्याय का विचार है कि मुरुण्डों का सामंत था। फलीत एवं राखालदास बनर्जी उसे शकों के अधीन मानते है। डॉ. स्मिथ एवं काशी प्रसाद जायसवाल का यह मत सर्वाधिक तर्क संगत प्रतीत होता है। ऐसा लगता है कि चन्द्रगुप्त प्रथम के पूर्व के गुप्त शासक लिच्छवियों के ही सामंत थे और कुमार देवी के साथ विवाह के उपरांत समस्त लिच्छवि राज्य चन्द्रगुप्त प्रथम

www.ignited.in

को प्राप्त हो गया तथा गुप्तों की शक्ति में असाधारण वृद्धि हुई। श्रीगुप्त ने लगभग 275ई0 से 300 ई0 तक राज किया।

घटोत्कच (300-319 ई0)- श्रभ्गुप्त की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र घटोत्कच शासक बना। घटोत्कच भी अपने पिता के समान सामंत शासक ही था, जो लिच्छवियों के अधिन राज करता था। घटोत्कच के संबंध में विशेष जानकारी उपलब्ध नहीं है। घटोत्कच का भी श्रीगुप्त के समान कोई अलग अभिलेख प्राप्त नहीं हुआ है। डॉ. मजुमदार के अनुसार घटोत्कच अपने पिता से अधिक प्रभावशाली रहा होगा क्योंकि सुपिया से प्राप्त लेख में गुप्त वंश को घटोत्कच वंश कहा गया है, किन्तु इस आधार पर निश्चित रुप से कुछ भी कहना कठिन है।

चन्द्रगुप्त (310-320 ई0)- घटोत्कच के पश्चात उसका पुत्र चन्द्रगुप्त प्रथम शासक बना। गुप्त अभिलेखों से ज्ञात होता है कि चन्द्रगुप्त प्रथम ही गुप्त वंश का प्रथम स्वतंत्र शासक था। जिसकी उपाधि महाराजाधिराज थी। यह सार्वभौमिक उपाधि इस बात का प्रमाण है कि चन्द्रगुप्त प्रथम गुप्त वंश का प्रथम शक्तिशाली और स्वतंत्र राजा हुआ जिसके पौरुषपूर्ण प्रारंभिक प्रयत्नों ने गुप्त राजशक्ति के सार्वभौम साम्रज्य के निर्माण का मार्ग प्रष्सित पत्र उपलब्ध नहीं है। अतः उसकी उपलब्धियों एवं तत्कालीन राजनीतिक घटनाओं के विषय में जानकारी बहुत कम है।

चन्द्रगुप्त के समय की प्रमुख घटना अपने राज्यरोहण के समय उसके द्वारा एक नवीन सम्वत की स्थापना करनी थी जो गुप्त सम्वत के नाम से जाना जाता है। चप्द्र गुप्त ने इस सम्वत की स्थापना 310-20 ई0 में की थी।

समुन्द्रगुप्त के शासन काल की दो सील मिलती है। नालंदा सील व गया सील जो क्रमश: 5 गुप्त सम्वत एवं 9 गुप्त सम्वत की है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि समुन्द्रगुप्त (319+5=325 ई0) में शासन कर रहा था। अतः चन्द्रगुप्त प्रथम ने इन सीलों की प्रमाणिकता पर संदेह व्यक्त किया है।

निष्कर्ष -

ऊपर लिखें विवरणों से साफ-साफ सुस्पष्ट होता है कि गुप्तोत्तर कालीन इतिहास एक मिशाल के रुप में परिलक्षित होता है। इतिहास साक्षी है कि पांचवी शदी के आस-पास जब गुप्त साम्राज्य का सर्वनाश होना शुरु हुआ तभी से मगध साम्राज्य और उसकी राजधानी पाटलिपुत्र ने भी अपना अस्तित्व खो दिया। क्योंकि इस समय तक आपसी फूट व रंजीस चरम पर पहुँच चुकी थी।

संदर्भ सूची-

1) भारत का इतिहास - लेखक - रोमिला थापड़, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली

2) प्राचीन भारत का इतिहास – संपादक - द्विजेन्द्र नारायण झा एवं कृष्ण मोहन श्रीमाली, 2001

Corresponding Author

Dr. Manoj Kumar Deo*

Near KB Jha College, Katihar